गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण १६

प्रकाश सभी में विद्यमान है। बाबा मुक्तानन्द सतत यह कहते थे। बार-बार वे सबका ध्यान हृदय की ओर लाते थे, ताकि प्रत्येक अपने प्रकाश से परिचित हो सके। अपने प्रकाश को जान लेने का अर्थ है, भगवान को पहचान लेना।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ९ "सम्मान," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १२९।